अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

2.2 साहित्य के पुनरावलोकन के उद्देश्य

2.3 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना :

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्तवपूर्ण कदम है। साहित्य पुनरावलोकन एक कठिन परिश्रम का कार्य है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो अथवा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हो साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य और प्रारंभिक कदम है। क्षेत्रीय अध्ययनों में जहां उपलब्ध उपकरणों तथा नवीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा प्रदत्त संकलन का कार्य होता है। समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक अनिवार्य साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है, जिससे किसी कार्य की पुनरावृत्ति नहीं हो सकती एवं अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अंतदृष्टि प्राप्त हो सकती है। पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है, अर्थात किसी भी विषय क्षेत्र का साहित्य ही उस आधारशिला के समान है, जिस पर सारा भविष्य का कार्य आधारित होता है।

2.2 साहित्य के पुनरावलोकन के उद्देश्य :

एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधी संबंधी आधुनिकतम खाजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधानकर्ता के लिये भी अपने अध्ययन क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।

1. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
2. ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिये आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।
3. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अंर्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है।

4. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन में अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
5. सत्यापन करने के लिये कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में करने की आवश्यकता होती है।
6. संबंधित साहित्य का अध्ययन शोधकर्ता को यह समझ देता है कि कौन सी शोधपद्धति के माध्यम से अपने शोध विषय की रचना की जाये।
7. यह परिणामों के विश्लेषण में उपयोगी निष्कर्षों और तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करता है। संबंधित अध्ययनों से प्राप्त किये गये निष्कर्षों की तुलन की जा सकती है और यह समस्या के निष्कर्षों के लिये उपयोगी हो सकता है।
8. संबंधित साहित्य के अध्ययन से अनुसंधानकर्ता ऐसी समस्याओं के चयन से बच जाता है जो व्यर्थ की और अनुपयोगी होती हैं।

2.3 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन :

1. **कार्नेय, मेक** (2004) ने अध्यापकों के असरकारक विकास में आईसीटी की भूमिका पर अपना शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों को प्रदत्त के रूप में लिया गया है। अध्ययन में देखा गया है कि अध्यापकों के ज्ञान एवं कौशल्य के विकास में आईसीटी के विभिन्न मॉडल कैसे प्रभाव दिखाते हैं। इस अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि शैक्षिक साधन सामग्री में आईसीटी से संबंधित साधन सामग्री को अपनाना चाहिये। आईसीटी सभी शिक्षाशास्त्र में शामिल होनी चाहिए और यह अध्यापकों के व्यवसाय विकास के लिये योग्य है।
2. **अन्नाराजा, पी. और जोसेफ, एम.एन.** (2006) 'अध्यापक प्रशिक्षार्थियों की आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति'। इस अध्ययन ने बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति जानने का प्रयत्न किया गया है। इस अध्ययन में 54 प्रतिशत पुरुष प्रशिक्षार्थी आईसीटी के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि 70 प्रतिशत महिला प्रशिक्षार्थी आईसीटी के

प्रति उच्च अभिवृत्ति रखती है। यहां पर पुरूष और महिला प्रशिक्षार्थियों का आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। माता-पिता की शैक्षिक लायकात के आधार पर भी प्रशिक्षार्थियों की आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. **सू, पी.एस. और शर्मा, पी.** (2006) यह शोधलेख तकनीकी के एकीकरण के लिये सुव्यवस्थित योजना की आवश्यकता पर है। इस शोध पेपर का प्रयोजन शिक्षा तकनीकी को अध्यापक शिक्षा के अंतर्गत किस प्रकार प्रायोजित किया जाये उसके संदर्भ में विभिन्न तजज्ञों और अध्यापकों के मंतव्यों को प्रदर्शित किया गया है। यह शोधलेख अमेरिका में विज्ञान की शिक्षा के क्षेत्र में हाल के वर्षो में सुधार के बारे में एक पृष्टभूमि प्रदान करता है। यह लेख प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में और पूर्वसेवाकालीन अध्यापक शिक्षा को संशोधित करने प्रौद्योगिकी उपकरण और विज्ञान के प्रयासों में सुधार के लिये उत्तरदायी है। शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी साधन सामग्री के उपयोग से संबंधित कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, और तकनीकी सुधार के लिये समय और प्रयत्न आवश्यक है। इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी साधन सामग्री के उपयोग के लिये प्रक्रिया और सुव्यवस्थित घटकों की आवश्यकता है। यहां पर तकनीकी योजना के लिये सुझाव भी प्रस्तुत किये गये हैं।

4. **पांडा, एस.के.** (2007) इस अध्ययन में 'स्नातकोत्तर छात्रों की इंटरनेट के प्रति अभिवृत्ति' को देखा गया है। इस अध्ययन का निष्कर्ष आया कि स्नातकोत्तर छात्र इंटरनेट के माध्यम से सीखने में ज्यादा अनुकूलता रखते हैं। यहां पर महिला और पुरूष स्नातकोत्तर छात्र, ग्रामीण एवं शहरी स्नातकोत्तर छात्र, कला और विज्ञान के स्नातकोत्तर छात्र, विज्ञान और वाणिज्य के स्नातकोत्तर छात्र, कला और वाणिज्य के स्नातकोत्तर छात्रों में इंटरनेट के प्रति अभिवृत्ति में शायद ही कोई अंतर है।

5. **वांग, क्यू. और वुड, एच.एल.** (2007) अधिगम के लिये आईसीटी का एकीकरण – एक सुव्यवस्थित योजना। सूचना एवं संचार तकनीकी का

अध्ययन – अध्यापन प्रक्रिया में उपयोग आज एकाएक बढ़ रहा है। और वर्तमान समय में कई अध्यापकों ने आकर्षक प्रयोग भी किये हैं विषय वस्तु को समाहित करने के आधार पर आईसीटी का एकीकरण विभिन्न तीन आधारों पर हो सकता है – पाठ्यक्रम, पाठ्यवस्तु और पाठ। यह शोध–प्रपत्र आईसीटी एकीकरण की अवधारणा के आधार पर यह बताते हैं कि विषय क्षेत्र में आईसीटी एकीकरण मार्गदर्शन के लिये एक व्यवस्थित योजना का मॉडल प्रस्तुत करता है। आईसीटी योजना को कैसे व्यवहार में लागू किया जाये यह मॉडल के रूप में यह शोध–प्रपत्र में दिखाया गया है।

6. **अफसेरी, एम. बकार के. ए. और समाह बी.ए. (2008)** विद्यालयी नेतृत्व और सूचना–संप्रेषण तकनीकी। यह शोध–पेपर प्रारंभिक विश्लेषण पर आधारित है, जो 30 माध्यमिक अध्यापकों पर किया गया ईरान के तेहरान प्रांत पर आधारित है। इस अध्ययन का निष्कर्ष आया कि जिस विद्यालय में प्रिंसीपल शिक्षण और प्रशासनिक उद्देश्य से कम्प्यूटर का उपयोग कर रहे हैं, और कम्प्यूटर का उपयोग करने में उदारमतवादी हैं, वह स्कूलों में कम्प्यूटर का उपयोग बढ़ा सकते हैं।

7. **गुलबहार, वाय (2008)** प्रौद्योगिकी एकीकरण के माध्यम से भावी अध्यापकों के कौशल्य में सुधार – एक अध्ययन। प्रस्तुत अध्ययन शिक्षण प्रौद्योगिकी और सामग्री विकास, स्नातक शिक्षक के तामील कार्यक्रम में कैसे मदद रूप हो सकती है यह जानने के लिये किया गया था। सेवापूर्वकालीन अध्यापकों के कम्प्यूटर कौशल, कम्प्यूटर और तकनीकी के प्रति अभिवृत्ति जानी गई। यहां पर 114 पूर्वसेवाकालीन अध्यापक प्रतिभागी थे, जिनमें आर्टस और विज्ञान की डिग्री वाले अध्यापक थे। यहां पर मात्रात्मक और गुणात्मक मापन के लिये प्रदत्तों का संकलन किया गया। यहां पर प्रतिभागियों के लिये कम्प्यूटर के प्रति अभिवृत्ति मापनी और कम्प्यूटर जागरूकता मापनी के माध्यम से पाठ्यक्रम की शुरूआत और पाठ्यक्रम के अंत में प्रश्नावली भरने को कहा गया। इसके अलावा शोधकर्ता के द्वारा साप्ताहिक कार्यक्रम में

प्रतिभागियों का निरीक्षण किया गया। निष्कर्ष यह आया कि कार्यक्रम के दौरान पूर्वसेवाकालीन अध्यापकों ने अपने भविष्य की कक्षाओं में कम्प्यूटर के उपयोग की दिशा में सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित किया और अपने कम्प्यूटर कौशल में भी बढ़ोत्तरी की।

8. **गोकटास, वाय, यील्डरीम, एस. और यील्यरीम झेड** (2009) 'सेवापूर्व अध्यापकों के तालीम कार्यक्रम में आईसीटी एकीकरण की मुख्य समस्याऐं और संभावित अवरोधन'। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सेवापूर्व अध्यापकों के शिक्षण कार्यक्रमों में संभावित समस्याओं और अवरोधन का अभ्यास करना है। यहां पर प्रदत्त का संकलन प्रश्नावली के माध्यम से शिक्षा संस्थान के 53 डीन, 111 अध्यापक और 1330 भावी अध्यापकों का चयन किया गया है। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह मिलता है कि सेवाकालीन प्रशिक्षण की कमी उचित शैक्षिक सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर सामग्री की कमी के कारण से सेवापूर्व अध्यापक तालीम कार्यक्रम में आईसीटी साधन सामग्री के उपयोग में बाधा पहुंचती है।

9. **मेहरा, बी.एन. और नेवा डी.आर.** (2009) 'प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति'। प्रस्तुत अध्ययन नेपाल में प्राथमिक विद्यालय के 300 अध्यापकों की आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति जानने के लिये किया गया है। इसमें निजी और प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति की तुलना की गई है। विविध शैक्षिक प्रवाहों जैसे कि भाषा, गणित, विज्ञान के अध्यापकों की आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति की भी तुलना की गई है।

10. **राफिडालि, ई.** (2009) 'कम्प्यूटर आधारित प्रौद्योगिकी और उसकी शैक्षिक उपयोगिता'। इस अध्ययन का उद्देश्य अध्यापकों को कम्प्यूटर की प्राथमिक जानकारी, कम्प्यूटर उपयोग का उद्देश्य और अध्ययन-अध्यापन में कम्प्यूटर की उपयोग सीमा को जानना है। इस अध्ययन में शोधकर्ता नें यह निष्कर्ष निकाला कि सबसे अधिक अध्यापकों को कम्प्यूटर का प्राथमिक ज्ञान है और ज्यादातर अध्यापक शैक्षिक उद्देश्य से कम्प्यूटर का उपयोग करते हैं। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र

में उपयोगिता के रूप में आई.टी. साधन-सामग्री के उपयोग में बहुत पीछे हैं। वह परंपरागत अध्यापन के साधनों से संतुष्ट हैं। वे अध्यापन की पुरानी पद्धतियों के साथ अभी तक गहरी नींद में हैं। उच्चतर माध्यमिक अध्यापकों को अपने व्यावसायिक क्षेत्र में सूचना तकनीकी को समाविष्ट करने की कोशिश करनी चाहिये। इससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा।

11. **रविचंद्रन, टी. और शशिकला, जे.ई.** (2009) 'वेब आधारित अध्यापन के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति'। यह अध्ययन डिजिटल संचार तकनीकी पर आधारित है। अध्यापन को आनंददायक और रसप्रद बनाने के लिये इस अध्ययन में अध्यापकों के तनाव कम करने के लिये वेब आधारित तालीम देने की बात बताई गई है। इस शिक्षण प्रणाली में वेब आधारित अध्यापन प्रक्रिया द्वारा अध्यापक नया माहौल तैयार करके छात्रों को अध्ययन के लिये आकर्षित करने का पर्यावरण का सर्जन करेंगे। यहां पर अध्यापकों के पांच साल के अनुभव और पांच साल से ज्यादा अनुभव में वेब आधारित अध्ययन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

12. **वुड, एस. डब्ल्यू.** (2009) 'शैक्षिक तकनीकी की अवधारणा : नाईजीरिया में सूचना एवं संचार तकनीकी की समस्या और संभावनाऐं'। इस अध्ययन में संचार तकनीकी के संदर्भ में सूचना एवं संचार तकनीकी की अवधारणा और समस्याओं को देखा गया है। यह शोध प्रपत्र इंजीनियरिंग के सिद्धांत और अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया के लिये उपयोगी उपकरण के रूप में शैक्षिक तकनीकी की बात करता है। नाईजीरिया में आईसीटी क्रांति के कारण वहां असरकारक रूप में शैक्षिक तकनीकी का विकास हुआ है। वहां पर राष्ट्र निर्माण के लिये आईसीटी की भूमिका देखते हुए उसके प्रति जागरूकता आवश्यक है। इस प्रपत्र में शैक्षिक तकनीकी की व्याख्या सीखने की उन्नति के महत्वपूर्ण स्वरूप में किया गया है।

13. **टाईवो, एस.** (2009) 'कक्षा शिक्षण में मीडिया की भूमिक के प्रति माध्यमिक अध्यापकों का दृष्टिकोण'। इस अध्ययन में नाईजीरिया के ओयो राज्य में कक्षा शिक्षण में मीडिया की भूमिका के प्रति माध्यमिक अध्यापकों के दृष्टिकोण का मूल्यांकन किया गया है। इस अध्ययन में ओयो राज्य के 150 माध्यमिक अध्यापकों ने भाग लिया है। जिसमें 110 प्रशिक्षित और 40 अप्रशिक्षित अध्यापकों की यादृच्छिक चयन कया गया है। जिसमें 70 महिला और 70 पुरूष है। यहां मीडिया की भूमिका के दो आधार अध्ययन के लिये चुने गये हैं। D- 349

14. **भेलवंशी, एम.** (2010) 'भोपाल के माध्यमिक विद्यालयों में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के प्रति जागरूकता और अभिवृत्ति : एक अध्ययन'। प्रस्तुत अध्ययन शोधकर्ता द्वारा भोपाल के 4 प्राईवेट और 5 शासकीय विद्यालयों पर किया है। जिसमें 200 अध्यापकों को शामिल किया गया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यालयों में उपलब्ध आईसीटी साधन-सामग्री का सर्वेक्षण करना और आईसीटी के प्रति माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की अभिवृत्ति और जागरूकता जानना है। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह आया कि प्राईवेट स्कूल में सरकारी स्कूल की तुलना में आईसीटी साधन-सामग्री ज्यादा है। आईसीटी के प्रति माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता और अभिवृत्ति को देखा जाये तो सरकारी और प्राईवेट स्कूल के अध्यापकों में सार्थक अंतर दिखाई देता है, उसी प्रकार महिला और पुरूष अध्यापकों की जागरूकता में भी सार्थक अंतर है।

15. **स्वामी, ए.एम.** (2010) 'कर्नाटक के हाईस्कूल के छात्रों और अध्यापकों की इंटरनेट के प्रति जागरूकता'। 2002 में 1000 चयनित सरकारी हाईस्कूल में 'माहिती संधु' नामक महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट शुरू किया गया। इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य हाईस्कूल के छात्रों को कम्प्यूटर संचालन का ज्ञान और सामान्य जागरूकता तथा वर्तमान इंटरनेट के क्रांतिकारी समय में इंटरनेट के उपयोग संबंधी जागरूकता पैदा करना था। इस अध्ययन में हाईस्कूल के छात्रों एवं अध्यापको में माहिती संधु प्रोजेक्ट के माध्यम

से इंटरनेट के प्रति कितने जागरूक हुए उसका अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में प्रदत्त के रूप में बीजापुर जिले के पांच तालुका के 100 हाईस्कूल छात्र और 40 अध्यापकों का चयन किया गया है। उपकरण के रूप में इंटरनेट जागरूकता और इंटरनेट के उपयोग संबंधी परीक्षण का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह आता है कि इस प्रोजेक्ट के माध्यम में हाईस्कूल छात्रों एवं अध्यापकों में इंटरनेट के प्रति जागरूकता और बढ़ोत्तरी हुई है।